संक्षेपण

1. प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उद्देश्य होना चाहिए| यदि तुम्हारा कोई उद्देश्य नहीं है तो तुम सफल ना होगे | इसको तुम्हें जानना आवश्यक है| उद्देश्यहीन मनुष्य बिना पतवार की नाव की तरह है| विभिन्न मनुष्यों के विभिन्न उद्देश्य होते हैं| बहुत लोग धन कमाना चाहते हैं और धन कमाना ही उनका उद्देश्य बन जाता है| कुछ लोग केवल आनंद उठाना चाहता है, कुछ लोग विद्या के लिए परेशान हैं| कुछ लोग सिर्फ बढ़ाई चाहते हैं| तुम्हारा उद्देश्य देश की सेवा करना होना चाहिए| तुम्हारा देश दरिद्र है| यहाँ किसान सच्चे सरल और पवित्र है| वे भूमि को अच्छी बनाकर अपनी मेहनत की अच्छी मजदूरी नहीं निकाल सकते| तुम उन्हें योग्य और सफल किसान बनाने का उद्योग कर सकते हो|

   उत्तर-

   शीर्षक: जीवन का उद्देश्य

   संक्षेपीकरण: उद्देश्यहीन मनुष्य का जीवन सफल होता है| कई तरह के उद्देश्यों में देश-सेवा का उद्देश्य उत्तम है| किसान अच्छी उपज नहीं कर पाते, इसलिए देश दरिद्र है| उन्हें योग्य और सफल किसान बनाने का उद्योग होना चाहिए|

   कुल शब्द- 121

   संक्षिप्त में शब्द-40

2. हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख सभी धर्मों में एक ही प्रकार की उदारता है तो फिर मनुष्य धर्म के नाम पर इतना उन्मत्त क्यों हो गया है? असल बात यह है कि इन झगड़ों का कारण धर्म नहीं है, इनके मूल में स्वार्थ है । स्वार्थ-साधनों के कारण ही यह सब दंगा-फसाद है । निकृष्ट स्वार्थ-साधन धर्म का अपने ही स्वार्थ के लिए व्यवहार करते हैं । इन्हीं स्वार्थ-साधनों के कारण आज हिन्दुत्व भी विपन्न हो रहा है, इस्लाम भी नष्ट हो रहा है और सिक्ख धर्म भी आहत हो रहा है। ऐसे ही हिन्कर्मा व्यक्तियों ने प्राचीन काल में धर्म के नाम पर ईसा मसीह को फाँसी पर लटकाया था । [शब्द - संख्या : 106]

   उत्तर-

   शीर्षक: धर्म और स्वार्थ

संक्षेपीकरण: हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख सभी उदार हैं, तो धार्मिक झगड़ा क्यों ? धार्मिक उन्माद फैलाकर लोग स्वार्थ हित साधते हैं । ऐसे ही स्वार्थी व्यक्तियों को धर्म के नाम पर ईसामसही को फाँसी पर लटकाया था । [संक्षेपित शब्द : 35]

कुल शब्द- 106

संक्षिप्त में शब्द-35

3. राजनीतिक दाँव-पेंच के इस युग में चुनाव व्यवसाय बना है । चुनाव में मतदाताओं को ठगने एवं उनको मायाजाल में फँसाने के लिए रंग-बिरंगे वायदे किये जाते हैं । गरीबी हटाने, बेरोजगारी मिटाने, सड़क बनवाने, स्कूल खुलवाने, नौकरी दिलवाने आदि अनेक प्रकार के वायदे चुनाव के समय किये जाते हैं । गरीबी और बेरोजगारी को हटाने के लिए उद्योगों की स्थापना करनी होगी, नयी परियोजनाओं का संचालन करना होगा । शिक्षा को रोजगार से जोड़ना होगा, न कि केवल चुनावी वायदों का कोरे वाग्जाल फैलाकर मतदाता को फँसाकर रखने से गरीबी और बेरोजगारी हटेगी । चुनावी वायदों की रंगीन परिकल्पनाओं से मतदाता की आस्था धीरे-धीरे समाप्त होने लगेगी ।

उत्तर-

शीर्षक : चुनावी मुद्दा

संक्षेपीकरण: चुनावी व्यवसाय के रूप में मतदाताओं को ठगने के लिए राजनीतियों के अनेकानेक दाव-पेंच प्रयत्नशील बने रहते हैं । चुनावी माहौल में गरीबी, बेरोजगारी सड़क, स्कूल, नौकरी आदि मुद्दे की गर्मजोशी से चर्चा होती है । अत : मतदाताओं की आस्था समाप्त होती चली जाती है ।

कुल शब्द -108

B संक्षेपित शब्द -44

4. मित्र का कर्तव्य इस प्रकार बतलाया गया है ---" उच्च और महान कार्यों में इस प्रकार सहायता देना, बढ़ावा देना और साहस दिलाना कि तुम अपनी निजी सामर्थ्य से बाहर काम कर जाओ ।" यह कर्त्तव्य उसी से पूरा होगा जो दृढ़ चित्त और सत्य संकल्प का हो । इसमें हमें ऐसे ही मित्रों की खोज में रहना चाहिए, जिनमें अधिक आत्मबल हो । हमें उसका पल्ला उसी तरह पकड़ना चाहिए, जिस तरह सुग्रीव ने राम का पल्ला पकड़ा था ।

उत्तर-

शीर्षक : मित्र का कर्तव्य

संक्षेपीकरण: एक मित्र दूसरे मित्र को बड़े काम करने का साहस देना ; उसे कठिनाई होने पर राम, सुग्रीव की तरह सहायता करना चाहिए ।

कुल शब्द संख्या -75

संक्षेपित शब्द- 25

5. वर्तमान युग में जिस भीषणता के साथ जीवन - संघर्ष चल रहा है उसमें वह व्यक्ति कभी भी विजय नहीं हो सकता, जो चुपचाप बैठ कर अति दीर्घकाल तक सोचता-विचारता रहेगा । यहाँ तो वही टिक सकता है, जिसमें काफी स्फूर्ति है, जो दूसरों को ढकेलकर आगे बढ़ सकता है ; नहीं तो जो उससे ताकतवर है उसे किनारे ढकेल देगा और आप आगे बढ़ जायेगा । अगर तुम इस जीवन में कुछ करना चाहते हो, अगर तुम्हें अपना जीवन सफल बनाना है, तो तुम्हें प्रत्युत्पन्नमति होना चाहिए, अपने निर्णय पर दृढ़ रहना चाहिए और उस पर जमकर काम करना चाहिए । जिस व्यक्ति में ये गुण पाये जाते हैं, उसमें अन्य गुणों का समावेश भी रहता है ।

उत्तर-

शीर्षक : सफलता का रहस्य

संक्षेपीकरण: आधुनिक संघर्षमय जीवन में वही टिक सकता है, जो दीर्घकाल तक सोच विचार करता है । जीवन में सफलता के लिए व्यक्ति में काफी स्फूर्ति , दूसरों को पीछे छोड़ आगे बढ़ने की क्षमता, प्रत्युत्पन्नमतित्व और निर्णय की दृढ़ता होनी चाहिए ।

कुल शब्द : 112

संक्षेपित शब्द - : 38

6. स्वतंत्रता अपने आप में निरपेक्ष नहीं है । एक सीमा पार कर जाने के बाद स्वतंत्रता स्वेच्छाचारिता और उच्छृखलता में बदल जाती है । एक व्यक्ति को धन कमाने की स्वतंत्रता है, पर काले बाजार की अथवा लूटने की स्वतंत्रता नहीं है । हम एक पागल को मोटर चलाने की स्वतंत्रता नहीं दे सकते, जबकि एक सामान्य नागरिक को जो मोटर चलाना जानता है, मोटर चलाने का आज्ञापत्रं प्राप्त करने में कोई कठिनाई नहीं होती । हमको लाउडस्पीकर पर गाने की स्वतंत्रता है, किन्तु हमारे गाने से हमारे पड़ोसी के सोने की स्वतंत्रता नष्ट नहीं होनी चाहिए । जो स्वतंत्रता हमें प्राप्त है, वह दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक नहीं होनी चाहिए । हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हर स्वतंत्रता के साथ एक दायित्व का प्रश्न जुड़ा हुआ है ।

उत्तर-

शीर्षक : स्वतंत्रता की सीमा

संक्षेपीकरण: स्वतंत्रता एक सीमा तक ही ठीक है । सीमाल्लंघन से यह स्वेच्छाचारिता और उदंडता में बदल जाती है । हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि हमारी स्वतंत्रता दूसरों की स्वतंत्रता में बाधक न बने, क्योंकि हर स्वतंत्रता एक दूसरे के दायित्व से जुड़ा हुआ है ।

कुल शब्द : 124

संक्षेपित शब्द : 41

7. युवा वर्ग का मस्तिष्क नई-नई बातों की ओर ज्यादा तेज दौड़ता है । उसमें अन्य वर्ग के व्यक्तियों से अधिक आवेश और शक्ति होती है । इस अवस्था में यदि सही शिक्षा और उचित मार्गदर्शन न मिले तो यही शक्ति और प्रेरणा निर्माण के स्थान पर विनाश की ओर ले जाती है । बिगड़ने और बनने की भी यही आयु होती है । दुर्भाग्य से हमारे देश में शिक्षा-पद्धति केवल उपाधि बाँटने का काम ही करती है, एक सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाला मनुष्य बनाना आज की शिक्षा - पद्धति के लिए मुश्किल है । [शब्द - संख्या 86]

उत्तर-

शीर्षक : आदर्श शिक्षा पद्धति का महत्त्व

संक्षेपीकरण: आज के युवा-वर्ग का मस्तिष्ठ नयी-नयी बातों की ओर अधिक तेज दौड़ता है । इस अवस्था में युवाओं में सही शिक्षा और उचित मार्गदर्शन मिलना आवश्यक है । अच्छी शिक्षा पद्धति होने से युवाओं का व्यक्तित्व अच्छा बनता है ।

कुल शब्द : 90

संक्षेपित शब्द : 30

8. प्रकृति के दो रूप हैं ; एक सुन्दर , दूसरा बेडौल । सच्चे कवि का हृदय दोनों में रमता है । किन्तु, जो प्रकृति के बाहरी सौन्दर्य का चयन अथवा उसकी रहस्यमयता का उद्घाटन करता रह गया, वह कवि नहीं है । प्रकृति के सच्चे रूपों का चित्रण संस्कृत के प्राचीन कवियों में मिलते हैं प्रबन्ध काव्यों में उसका संश्लिष्ट वर्णन हुआ है |

उत्तर-

शीर्षक: कवि : कर्म और प्रकृति

संक्षेपीकरण: प्रकृति के दो रूप हैं - एक सुन्दर , दूसरा बेडौल । सच्चा कवि दोनों का समान रूप में वर्णन करता है , जो केवल इसकी बाहरी सौन्दर्य का चयन करता है वह कवि नहीं है ।

कुल शब्द : 65

संक्षेपित शब्द : 25

9. वर्तमान समय की भारतीय नारियाँ डॉक्टर, नर्स, इन्जीनियर, वकील , अध्यापिका हैं । वैज्ञानिक, पुलिस और सत्ता-सेवा में भी उन्होंने अपना परचम फहराया है । हर साहस और जोखिम का काम वे कर रही हैं । वे अंतरिक्ष में उड़ान भर रही हैं । कम्प्यूटरों पर बैठी शोधरत हैं । खेल के मैदानों में उनके जौहर देखने मिल रहे हैं । वे समाज की आलोचनाओं को नकार रही हैं । साहित्य, कला, नृत्य, रंगकर्म, सिनेमा, राजनीति और सांस्कृतिक गतिविधियों में वे संलग्न हैं । इन्दिरा गाँधी भारत की सफल प्रधानमंत्री बनीं । आज प्रतिभा पाटिल भारत की राष्ट्रपति हैं । मायावती, ममता बनर्जी, जयललिता, मेधा पाटकर, अरुंधती राय और कल्पना चावला विश्व ख्याति अर्जित कर चुकी हैं ।

उत्तर-

शीर्षक : आधुनिक भारतीय नारियाँ

संक्षेपीकरण: आधुनिक भारतीय नारियाँ डॉक्टर, नर्स, इंजीनियर, वकील, अध्यापक, वैज्ञानिक, पुलिस, सत्ता-सेवा, खेल, साहित्य, कला, नृत्य, रंगकर्म, सिनेमा, राजनीति, सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ ही अन्य हर साहस और जोखिम के क्षेत्र में अपना कमाल दिखा रही है ।

कुल शब्द: 110

संक्षेपित शब्द: 36

10. देशभक्त अपनी मातृभूमि को सच्चे हृदय से प्यार करता है । यदि एक ओर उसे अपने स्वर्गिक अतीत पर गर्व है, तो दूसरी ओर वह अपने भविष्य को भी उज्ज्वल बनाना चाहता है । वह सदैव समाज में क्रांति चाहता है । वह समाज में प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों तथा उन परंपराओं और परिपाटियों के विरुद्ध क्रांति करता है, जो देश की उन्नति के पथ में बाधाएँ हैं । लोगों में एकता, प्रेम और सहानुभूति उत्पन्न करना, उनमें राष्ट्रीय, सामाजिक एवं नैतिक चेतना जागृत करना और उन्हें कर्तव्यपरायण तथा अध्यवसायी बने रहने के लिए प्रोत्साहन देना ही देशभक्ति है ।

उत्तर-

शीर्षक : सच्ची देशभक्ति

संक्षेपीकरण: देशभक्त को अपनी मातृभूमि से हार्दिक प्यार होता है । लोगों में एकता, प्रेम, सहानुभूति उत्पन्न कर उनमें राष्ट्रीय, सामाजिक, नैतिक चेतना जगाना तथा उन्हें कर्तव्य परायणत्व और अध्यवसायी बनने के लिए प्रोत्साहिक करना ही देशभक्ति है ।

कुल शब्द : 100

संक्षेपित शब्द: - 34

11. अनुशासन की आवश्यकता छात्र जीवन के लिए सबसे अधिक है । वे विवेक - सम्मत श्रृंखला में बँधे रहने की आदत डालें । उनकी क्षमता बिखरकर नष्ट न होने पाए , उनकी साधना के बादल चट्टान और बंजर पर न बरसे, उनकी लालसा कलंक से काले पड़े भौंरे की लालसा मात्र न बन जाए - इसके लिए छात्रों को व्यावहारिक जीवन में अनुशासन के नियमों का पालन करना परमावश्यक है । जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है । केवल विद्यालय में नहीं वरन् परिवार एवं समाज में भी अनुशासन के नियमों का पालन करना चाहिए । उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि पूरी सृष्टि और पूरा ब्रह्माण्ड भी अनुशासन में बँधा है । जीवन में अनुशासन न हो तो हम आसानी से अराजकता का शिकार हो जाएँगे ।

उत्तर-

शीर्षक : छात्र जीवन एवं अनुशासन

संक्षेपीकरण: छात्र जीवन में विद्यालय, परिवार, समाज सर्वत्र अनुशासन आवश्यक है । क्षमता, साधनों तथा विवेक को मूर्तरूप देना तथा अराजकता से मुक्ति ही उन्हें अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचा सकता है । संपूर्ण सृष्टि एवं ब्रह्मांड भी अनुशासनबद्ध है ।

कुल शब्द- 110

संक्षेपित शब्द: 35

12. पिता का स्नेह बदला चुकाने की इच्छा से होता है । वह पुत्र को इसलिए पालता-पोषता और पढ़ाता-लिखता है कि बुढ़ापे में वह हमारे काम आयेगा तथा जब हम सब अपाहिज और अपंग हो जायेंगे, तब हमारी सेवा करेगा और हमारे अन्न-वस्त्र की फिक्र रखेगा । पर माँ का उदार और अकृत्रिम प्रेम इन सब बातों की कभी नहीं इच्छा रखता । माँ अपनी प्रिय संतान के लिए कितना कष्ट सहती है, जिसे यादकर चित्त में वात्सल्य भाव का उद्गार हो जाता है ।

उत्तर-

शीर्षक : माता और पिता का प्रेम

संक्षेपीकरण: पुत्र के प्रति पिता का प्रेम, प्रतिदान-भावना से प्रेरित होता है किन्तु माता का प्रेम नि : स्वार्थ और कामना शून्य होता है । माता के संतान-प्रेम की स्मृति वात्सल्य जनक है ।

13. मेरे नौजवान दोस्तों , बलवान बनो । तुम्हारे लिए मेरी यही सलाह है । तुम भगवद्गीता के स्वाध्याय की अपेक्षा फुटबॉल खेलकर कहीं अधिक सुगमता से मुक्ति प्राप्त कर सकते हो । जब तुम्हारी रंगे और पुढे अधिक दृढ़ होंगे तो तुम भगवद्गीता के उपदेशों पर अधिक अच्छी तरह चल सकती हो । गीता का उपदेश कायरों को नहीं दिया गया था बल्कि अर्जुन को दिया गया था, जो बड़ा शूर वीर, पराक्रमी, और क्षत्रिय शिरोमणि था । कृष्ण भगवान के उपदेश और अलौकिक शक्ति को तुम तभी समझ सकोगे जब तुम्हारी रंगों में खून कुछ और तेजी से दौड़ेगा ।

उत्तर-

शीर्षक : नौजवान और भगवद्गीता

नौजवानों को बलवान बनना चाहिए । वे भगवद्गीता के स्वाध्याय की अपेक्षा फुटबॉल खेलें । वे भगवद्गीता के उपदेशों पर तभी अच्छी तरह चल सकते हैं तब उसकी रगें और पुट्ठे अधिक दृढ़ होंगे ।

कुल शब्द : 96

संक्षेपित शब्द :32

14. किसी प्रजातंत्र का भविष्य उसके नागरिकों पर निर्भर करता है । जब एक समाज का प्रत्येक सदस्य अपने देश के प्रति अपना व्यक्तिगत तथा सामूहिक उत्तरदायित्व पूरी तरह नहीं समझता तब तक कोई प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणाली कैसे सफल हो सकती है ? उत्तरदायित्व की भावना शिक्षा से होती है । अशिक्षित आदमी तो अपनी मर्जी के मुताबिक काम करना ही अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है । प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक प्लेटो के अनुसार किसी आदर्श गणतंत्र में कवियों के लिए कोई स्थान नहीं । व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति कवियों के असाधारण प्रेम को ध्यान में रखकर ही प्लेटो इस नतीजे पर पहुँचे होंगे । यह तो स्पष्ट है कि हर आदमी अपनी मनमानी करने लग जाये तो समाज तक दिन भी नहीं टिक सकता । हम चाय पीयेंगे या कहवा , अपने खेत में गेहूँ उपजाएँगे या धान , इन बातों के लिए किसी के हुक्म पर हरगिज नहीं चलना है । फिर भी एक-दूसरे के मौलिक अधिकारों का आदर तो करना ही है ।

उत्तर-

शीर्षक : प्रजातंत्र का आधार

संक्षेपीकरण: नागरिक प्रजातंत्र का आधार होता है । प्रजातंत्र शासन प्रणाली की सफलता समाज के प्रत्येक सदस्य के व्यक्तिगत तथा सामूहिक उत्तरदायित्व पर निर्भर करती है । हर आदमी की मनमानी समाज के लिए हानिकारक है । अपनी इच्छा-पूर्ति हेतु किसी के दबाव पर चलना नहीं है, पर परस्पर के मौलिक अधिकारों का आदर अवश्य करना है ।

कुल शब्द-संख्या : 154

संक्षेपित शब्द : 53

15. किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी भरने वाला साहित्य ही है । इसलिए साहित्य सर्वतोभावेन संरक्षणीय है । सब कुछ खोकर भी यदि हम उसे बचाये रखेंगे, तो फिर इसके द्वारा हम सब कुछ पा भी सकते हैं । इसे खोकर यदि बहुत कुछ पा भी लेंगे , फिर इसे कभी पा न सकेंगे ।

कारण, यह हमारे पूर्वजों की कमाई है । किसी जाति के पूर्वजों का चिरसंचित ज्ञान-वैभव ही साहित्य है ।

उत्तर-

शीर्षक : साहित्य की पराकाष्ठा

संक्षेपीकरण: साहित्य किसी राष्ट्र या जाति में संजीवनी का संचार करता है । इसलिए साहित्य का संरक्षण आवश्यक है । यह हमारे पूर्वजों की कमाई है ।

कुल शब्द : 68

संक्षेपित शब्द : 20